7

परमेश्वर की रचना

''जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो'' (इफिसियों 2:21, 22)।

पुराने नियम के युग में सबसे बड़ी इमारत सुलैमान द्वारा बनाया गया यहोवा का भवन ही होगा। सबसे पहले ''यहोवा का भवन'' बनाने की मंशा दाऊद द्वारा ही प्रकट की गई थी, पर परमेश्वर ने नातान नबी के द्वारा दाऊद को बताया था कि यह सौभाग्य सुलैमान को प्राप्त होगा क्योंकि दाऊद जीवन भर युद्ध करता रहा था (2 शमूएल 7:5; 1 इतिहास 28:3)। फिर भी, दाऊद को अपनी मृत्यु से पहले मन्दिर बनाने की सामग्री एकत्र करने की अनुमति मिल गई थी।

सुलैमान की अगुआई में, मन्दिर का निर्माण सबसे बढ़िया और महंगी सामग्री से, बड़ी ही सावधानी और निपुणता से हुआ था। इसका निर्माण तो पत्थर से हुआ था, पर सजाया देवदारु और सोने से गया था। इसका आकार वेदी से दोगुना था (1 राजा 5:1-9:9; 2 इतिहास 2-7) और इसे पूरा करने में साढ़े सात वर्ष लगे थे। मौरियाह पर्वत पर स्थित यह मन्दिर शायद उस स्थान के निकट बनाया गया था जहां इब्राहीम इसहाक को बलिदान करने के लिए आया था।

मन्दिर का निर्माण करने के लिए दस हज़ार[1] इस्राएली बेगार पर लगाए गए थे (1 राजा 5:13, 14) और 1,50,000 गैर इस्राएलियों को मजदूरी पर लगाया गया था (1 राजा 5:15; 2 इतिहास 8:7-10)। गैर इस्राएली वे लोग थे जिन्हें युद्ध में जीतकर लाया गया था, कर्ज़ में बेचे गए थे या घर जन्मे दास थे। उन्हें दो भागों में बांटा गया था जिसमें सत्तर हज़ार बोझा ढोने वाले और अस्सी हज़ार पत्थर ढोने वाले तथा वृक्ष उखाड़ने वाले लोग थे। इन सभी मजदूरों के मुखियों की संख्या 3,850 थी।[2] अन्य शब्दों में मन्दिर के निर्माण के लिए कुल 1,63,850 लोगों ने लगातार काम किया था। श्रमिकों और मुखियों की इतनी बड़ी संख्या से पता चलता है कि यह निर्माण कार्य कितना बड़ा था।

मन्दिर का समर्पण सुलैमान की प्रार्थना (2 इतिहास 6:3-42) बाइबल की अति सुन्दर प्रार्थनाओं में से एक है। प्रार्थना के अन्त में, उसने यहोवा के सामने 22,000 बैलों और 1,20,000 भेड़ों की बलि दी (1 राजा 8:62, 63; 2 इतिहास 7:4, 5)। इतिहास लिखने वाले

ने कहा है, ''जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों तथा और बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया। और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था'' (2 इतिहास 7:1, 2)।

586 ई पू. में नबूकदनेस्सर द्वारा मन्दिर को नष्ट किए जाने से पहले यह इस्राएल जाति के लिए गौरवमयी भवन था।

लग सकता है कि पुराने नियम का यह मन्दिर परमेश्वर के लिए बनाई सबसे विशाल इमारत होगी, पर ऐसा नहीं है। परमेश्वर के लिए इससे भी विशाल इमारत यीशु ने बनाई थी। नये नियम के लेखकों ने इसे ''कलीसिया'' कहा है, और संसार के इतिहास में परमेश्वर के लिए बनाया गया यह सबसे विलक्षण और तेजोमय भवन है।

इफिसियों 2 अध्याय में पौलुस ने मसीह के बाहर और मसीही होने की पूरे नये नियम की सबसे अधिक स्पष्ट तुलनाओं में से एक तुलना भी की है। उसने इस अन्तर का तस्वीर के ''आगे-और-पीछे'' के रूप में वर्णन किया। उदाहरण के लिए, पौलुस ने कहा कि मसीही बनने से पूर्व व्यक्ति मृत होता है। वह संसार की अभिलाषाओं के अनुसार, शैतान की शक्ति से चल रहा होता है, और उसका स्वभाव क्रोध की संतान वाला होता है (इफिसियों 2:1-3)। मसीही बनने के बाद, पौलुस ने कहा, उसे क्षमा कर दिया जाता है। अब वह मसीह में है और अनुग्रह के द्वारा उसे उद्धार मिला है (इफिसियों 2:4-10)। इस तुलना को संक्षिप्त करते हुए पौलुस ने यहूदी हों या अन्यजाति, मसीह में हम सब के एक होने की बात की है। ऐसा करके, उसने कलीसिया के लिए तीन रूपकों अर्थात एक नगर (2:19), एक परिवार (2:19), और एक इमारत (2:20, 21) का इस्तेमाल किया है। परमेश्वर की इमारत के रूप में कलीसिया का उसका चित्रण पवित्र आत्मा द्वारा हमें दिखाए गए कलीसिया के सबसे सुन्दर चित्रों में से एक है।

> इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो (इफिसियों 2:19-22)।

पवित्र आत्मा ने सजीव, प्रतीकात्मक भाषा में कलीसिया को परमेश्वर की रचना अर्थात भवन कहा है। इस रूपक में से कलीसिया को देखने से हमें इसके विलक्षण स्वभाव का समरण कराया जाता है।

''मनुष्यों से बना'' एक भवन

पुराने नियम के मन्दिर के भवन विपरीत, कलीसिया अर्थात परमेश्वर का नये नियम

का भवन लोगों से बनता है। इस भवन को बनाने के लिए प्रत्येक मसीही सामग्री लाता है।

पौलुस ने कहा कि जो अन्यजाति लोग मसीही बन गए थे वे अब विदेशी या मुसाफिर नहीं रहे, बल्कि वे पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के लोग बन गए थे जिसे प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बनाया गया था, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप है। उसने कहा कि लोग, यहूदियों से मसीही बने हों या अन्यजातियों से, मिलकर परमेश्वर की रचना अर्थात भवन बनते हैं। पतरस ने 1 पतरस 2:5 में ऐसी ही एकरूपता बनाई: ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ...।''

कलीसिया एक भवन है, पर यह आत्मिक भवन है जो उन लोगों से मिलकर बनता है जो मसीही बन गए हैं। प्रत्येक मसीही इस भवन का एक आत्मिक पत्थर है। जीवित पत्थरों के रूप में सब मसीहियों को एक अदृश्य, शक्तिशाली और आत्मिक जीवन में जोड़ा जाता है, जिसकी छवि एक इमारत जैसी है।

पौलुस द्वारा दिखाई गई तस्वीर छोटे-छोटे सैकड़ों समूहों को इकट्ठा करके एक बहुत बड़ी इमारत बनाने की नहीं है। नया नियम विश्वव्यापी कलीसिया को संसार की सभी साम्प्रदायिक कलीसियाओं को मिलाकर बनाने के रूप में चित्रित नहीं करता। बल्कि यह विश्वव्यापी कलीसिया का पूर्ण और स्थानीय कलीसिया के रूप में मसीह की कलीसिया की प्रत्येक मण्डली का चित्रण है।[3] विश्वव्यापी कलीसिया सारे संसार के निजी मसीहियों से मिलकर बनती है, जो इस आत्मिक भवन अर्थात कलीसिया में जीवित पत्थर का काम करते हैं।

हमें कलीसिया के लिए अंग्रेज़ी के शब्द चर्च को ईंट-पत्थरों से बनी इमारत या आराधना के स्थान से कभी नहीं उलझाना चाहिए। नये नियम में कलीसिया के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द चर्च का अर्थ कहीं भी ईंट-पत्थरों के भवन के लिए नहीं किया गया। मसीही लोगों को आराधना के लिए इकट्ठा होते रहने की आज्ञा है (इब्रानियों 10:25), और इस आज्ञा का अर्थ इकट्ठा होने के लिए एक स्थान होगा; परन्तु स्पष्टत: यह स्थान अन्य बातों के साथ किसी का घर, खुला स्थान, या इकट्ठा होने के लिए विशेष रूप से बनाया गया कोई भवन हो सकता है। नये नियम में आराधना के स्थान के बारे में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिए गए हैं। यह प्रत्येक स्थान पर रहने वाले मसीही लोगों की समझ और इच्छा पर छोड़ दिया गया है। वे चाहें तो लगातार आराधना के लिए इकट्ठे होने के लिए कोई भवन बना सकते हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि कलीसिया अर्थात चर्च जो कि परमेश्वर का भवन है, स्थानीय मसीहियों को कहा गया है, आराधना करने के स्थान को नहीं।

पौलुस के अनुसार, मसीही लोगों को चाहिए कि वे अपने आपको परमेश्वर के भवन के रूप में देखें और हर एक मसीही अपने आपको उस भवन के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में देखे। जब एक मसीही गली में से गुजरता है, तो देखने वाला कह सकता है, ''परमेश्वर के भवन अर्थात कलीसिया का जीवित पत्थर जा रहा है।''

संसार परमेश्वर की कलीसिया को मसीही लोगों को देखकर पहचाने, न कि उस भवन या स्थान को देखकर जहां मसीही लोग आराधना करते हैं। आइए यह सुनिश्चित करें कि

हम परमेश्वर के भवन अर्थात रचना के रूप में रहें, कि हम मसीह की कलीसिया में अपनी स्थिति के अनुसार जीवन बिताएं।

एक ''जीवित'' भवन

यह तथ्य कि कलीसिया ''मनुष्यों'' से बना भवन है स्पष्ट करता है कि कलीसिया एक ''जीवित'' भवन भी है। पुराने नियम का सुलैमान का मन्दिर देवदारु, सोने, चांदी, और हाथी दांत जैसी बहुमूल्य सामग्रियों से बना था, पर आज परमेश्वर का भवन जीवित पत्थरों से बनता है।

पौलुस ने कलीसिया को कभी भी एक संस्थान नहीं कहा। उदाहरण के रूप में, जिस आयत पर हम ध्यान दे रहे हैं, उसमें उसके कहने का भाव था कि कलीसिया एक प्राणी अर्थात एक आत्मिक भवन है जो मसीही लोगों से बनती है जो जीवित हैं और विकास कर रहे हैं- जो कि एक ऐसा रोमांचित अस्तित्व है जो सामान्य दिलचस्पी रखने वाले लोगों को इकट्ठा करके नहीं बनाया गया।

जिस इमारत के बारे में पौलुस ने लिखा था उसका ऊपरी भाग नहीं है। इसकी दीवारें व नींव तो हैं पर छत नहीं है। मसीही लोग दीवारें बनते हैं, और नींव प्रेरित और भविष्यवक्ता हैं, यीशु इसके कोने के सिरे का पत्थर है। कोने के पत्थर के रूप में मसीह, पूरे भवन को जोड़कर रखता है। प्रभु में मसीही बनने वाले लोगों को इस इमारत की दीवारों में लगा दिया जाता है; और क्योंकि यह सत्य है, इसलिए यह इमारत नये मसीहियों के जन्म लेने से बढ़ती और ऊंची होती जाती है। इफिसियों 2:21 में प्रयुक्त अनुवादित शब्द ''बनती जाती'' का इस्तेमाल नये नियम में केवल एक और बार देह के प्रत्येक भाग के जीवित रहने को बताने के लिए इफिसियों 4:16 में किया गया है जिससे सारी देह विकास करती है।

लूका ने प्रेरितों 2 अध्याय में कलीसिया के बारे में लिखा: ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए''(आयत 41)। दो अध्यायों के बाद उसने कहा, ''परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पांच हजार पुरुषों के लगभग हो गई'' (प्रेरितों 4:4)। थोड़े से समय में ही, परमेश्वर के भवन में तीन हज़ार जीवित पत्थरों से बढ़कर पांच हज़ार तक हो गए। तब से लेकर, परमेश्वर की रचना बढ़ती ही जाती है। जितनी यह पिछले वर्ष थी अब उससे ऊंची हो गई है। यीशु के लौटने तक यह ऐसे ही बढ़ती रहेगी।

पतरस ने मसीही लोगों को ''जीवित पत्थर'' (1 पतरस 2:5), और पौलुस ने ''जीवित बलिदान'' (रोमियों 12:1) कहा। निश्चय ही, परमेश्वर की इस रचना से सम्बधित सब कुछ जीवित ही है। पवित्र शास्त्र में, परमेश्वर पिता को ''जीवता परमेश्वर'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9) कहा गया है। बाइबल परमेश्वर का ''जीवित और प्रबल'' (इब्रानियों 4:12) वचन है। पतरस के अनुसार, यीशु ''जीवता पत्थर'' है (1 पतरस 2:4)। मसीही लोगों की आशा वास्तविक और प्रामाणिक है, और परिणामस्वरूप, यह ''जीवित आशा'' (1 पतरस 1:3)

है। वह मार्ग जिसमें मसीही लोगों ने मसीह की आज्ञा मानकर प्रवेश किया है ''नया और जीवता मार्ग'' (इब्रानियों 10:20) कहलाता है। अनादि मसीह के रूप में यीशु हमारा मध्यस्थ है, जो स्वर्ग में हमारे लिए सिफारिश करने को ''सर्वदा जीवित'' (इब्रानियों 7:25) है। हमें प्रतिज्ञा दी गई है कि मृत्यु भी मसीह में हमारे जीवन को नहीं छीन सकती, क्योंकि यदि हम उसमें विश्वास करते हैं, तो मरकर भी उसमें जीवित रहेंगे (यूहन्ना 11:26)।

एक मसीही किसी संगठन का भाग नहीं है। वह जीवित, विकास करने वाले आत्मिक घर में एक जीवता पत्थर है। हम परमेश्वर की रचना के विकास और सुन्दरता के लिए प्रतिदिन अपना योगदान दे रहे हैं। हमें दूसरे मसीहियों के साथ उस घर को बनाने के लिए इकट्ठे जोड़ा गया है जो कभी बढ़ना बन्द नहीं करती। जब हम किसी को मसीह के पास लाते हैं तो हम परमेश्वर के भवन में एक और जीवित ईंट जोड़ रहे होते हैं। इसके विपरीत, यदि हम किसी प्रकार से एक अन्य मसीही का नाश करते हैं, तो हम परमेश्वर के भवन में से एक जीवित पत्थर निकाल रहे होंगे। प्रत्येक मसीही दूसरे सभी मसीहियों से जुड़ा हुआ है; हम दीवार में लगे पत्थरों की तरह एक दूसरे के साथ और एक दूसरे के लिए इस प्रकार से जीवित रहते हैं कि आपस में जुड़े रहकर हम परमेश्वर के लिए भवन बनते हैं।

''आत्मा के निवास'' वाला भवन

मकान रहने के लिए ही बनाए जाते हैं, और परमेश्वर का भवन इसका अपवाद नहीं है। उसके आत्मिक घर में उसका आत्मा रहता है।

पौलुस ने कहा था, ''... सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो'' (इफिसियों 2:21, 22)। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को यह भी बताया, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' (1 कुरिन्थियों 3:16)।

स्वर्ग की तरह परमेश्वर पृथ्वी पर भी निवास करता है। पृथ्वी पर उसके निवास का स्थान कलीसिया है। वह आत्मा के द्वारा अपने परिवार के साथ और उनमें रहता है। कलीसिया पृथ्वी पर परमेश्वर का दिखाई देने वाला भाग है; परमेश्वर अपनी रचना अर्थात कलीसिया के द्वारा प्रतिदिन रहता और काम करता है।

मेरा पालन-पोषण सोनोरा समुदाय में आरकैन्सॉ में सप्रिंगडेल से साढ़े छह मील दूर एक फॉर्म हाउस में हुआ था। हमारे घर से कुछ दूर एक नदी है उससे कुछ दूर खेत के आगे, एक पुराना मकान है जो उन दिनों अधिकतर समय खाली ही रहता था। इस घर में एक बूढ़े पति-पत्नी रहते थे, जिनमें से एक व्हील चेयर पर ही रहता था। मुझे उस दम्पत्ति के बारे में तो अधिक याद नहीं, क्योंकि जब वे उस पुराने घर में रहते थे उस समय मैं छोटा सा बालक था। उस दम्पत्ति की मृत्यु के कई वर्षों बाद उस घर के गिर जाने तक वह खाली ही रहा था। काफी समय तक उस घर के खाली रहने के समय मुझे याद है कि हम वहां जाया करते थे। उस दम्पत्ति की मृत्यु के बाद भी वह घर वैसे ही था अर्थात उसका फर्नीचर, बर्तन, बिस्तरे

और अन्य वस्तुएं अभी भी वहीं थीं। इस कारण मुझे उस घर में चलते हुए भय लगने लगा था। कुछ समय खाली रहने के बाद, इसमें से धूल, नरम मिट्टी और गिरावट की गंध आने लगी थी। वर्षों पहले उस घर में रहने वाले दम्पत्ति के जीवन और उनके कार्यों के शांत स्वर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की सुर्खियां बने थे। उस पुराने घर में इधर-उधर देखने पर भूत जैसा अहसास होने का स्पष्ट कारण यह था कि इस घर में कोई रहता नहीं था। यह एक खाली, सजा हुआ मकान था जिसमें जीवन नहीं था। कुछ देर तक खाली रहने वाले और हंसी तथा जीवन के प्रेमरहित घरों की हालत ऐसी ही दयनीय होती है। वे आम तौर पर पृथ्वी पर धब्बा बन जाते हैं।

यदि उस पुराने घर की तरह, कलीसिया में कोई न रहता हो, तो यह उस मकान की तरह ही व्यर्थ बन जाएगी। परन्तु, सच्ची कलीसिया पुराने समय का परम्परागत स्मृति चिह्न नहीं है जिसके जीवन की ऊर्जा न हो बल्कि इसमें तो परमेश्वर का आत्मा वास करता है! यीशु ने इसे संसार में परमेश्वर के रहने के निवास स्थान के रूप में बनाया है।

पूरे रोमी साम्राज्य में मूर्तियों से मन्दिर भरे पड़े थे। इफिसुस में एशियाई देवी डायना या अरतमिस का भव्य मन्दिर था। यहूदी धर्म का यरूशलेम में मन्दिर था और पूरे रोमी जगत में इनके आराधनालय जगह-जगह थे, जहां इसके सदस्य परमेश्वर द्वारा मूसा की व्यवस्था को समाप्त करने के बाद उसे पूरा करने का प्रयास करते थे। परन्तु, संसार के मन्दिरों में सबसे सुन्दर और विशाल मन्दिर तो परमेश्वर का ही है। उसका मन्दिर हाथों से नहीं बल्कि स्वयं परमेश्वर का बनाया हुआ है; यह उस महिमा और तेज के साथ चमकता है जिसकी तुलना मनुष्यों के बनाए किसी मन्दिर से नहीं की जा सकती, क्योंकि परमेश्वर स्वयं इसमें वास करता है। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की ईश्वरीय नींव पर, यीशु को कोने का सिरा बनाकर, परमेश्वर प्रत्येक जीवित पत्थर अर्थात नया जन्म पाने वाले प्रत्येक मसीही को दूसरे पत्थर पर रखता है। हर किसी को इमारत/भवन की दीवार में परमेश्वर के अनुग्रहकारी हाथ से ऐसे लगाया जाता है कि सभी जीवित पत्थर पूरी तरह से एक दूसरे से जुड़ जाते हैं। भारत, अफ्रीका, ऑस्ट्रिया, अमेरिका, यूक्रेन, रूस, और संसार के अन्य सभी भागों में जब लोग मसीह में परिवर्तित होते हैं तो परमेश्वर दिन-ब-दिन इस इमारत को बढ़ाता रहता है। फिर इस आत्मिक, अदृश्य, विकास करते रहने वाले मन्दिर में परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा निवास करता है!

यह सच्चाई हमारे मनों में एक बड़ी चुनौती के साथ आनी चाहिए। हम संसार में परमेश्वर का मन्दिर हैं! आइए हम बुद्धि और पवित्रता, आज्ञाकारिता और विश्वास के साथ जीवन बिताएं!

सारांश

इफिसियों 2:19-22 में पौलुस द्वारा एक महान और तेजोमय सच्चाई की घोषणा की गई है कि कलीसिया परमेश्वर की रचना है। यह रचना या भवन ''मनुष्यों से बना'' ''जीवित'' और ''आत्मा का निवास स्थान'' है।

कहते हैं कि एक धनी व्यक्ति ने विदेश में रहते हुए अपना मकान बनाने के लिए एक भवन निर्माता को ठेका दिया। ठेकेदार को भवन के निर्माण के लिए लगने वाली सामग्री के लिए धन के इस्तेमाल की खुली छूट दी गई। निर्माण कार्य का पूरा कार्यभार उसे सौंप दिया गया। इमारत बनाते समय, ठेकेदार ने मजबूत, टिकाऊ सामान के स्थान पर हल्का और सस्ता सामान लगाकर महंगे सामान का दाम लिया और बाकी का धन अपनी जेब में डाल लिया। उसने अपनी इस हेराफेरी को ईंट और गारे, फर्श और दीवारों पर सजावट और पेंट करके छुपा दिया। जब आपका स्वामी लौटा, तो घर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका था व मकान रहने के लिए तैयार था। बाहर से देखने पर लगता था कि वह मकान मालिक की योजनाओं के अनुरूप बनाया गया है, परन्तु जो दिखाई नहीं देता था वह सस्ते बोर्ड और बीम, पाइप, नालियां, टाइलें और सीमेंट आदि घटिया किस्म का था। वह ठेकेदार कितना आश्चर्यचकित और निराश हुआ होगा जब उस स्वामी ने कुंजी पकड़ाते हुए उसे कहा होगा, ''यह मकान तुम ही रख लो!'' क्योंकि ठेकेदार ने स्वामी को धोखा देकर वास्तव में अपने आपको ही धोखा दिया था।

हमें मकान *बनाने* का आदेश नहीं दिया गया बल्कि हमें घर बनने की आज्ञा दी गई है; हमें कोई ऐसा वैसा मकान नहीं, बल्कि परमेश्वर का भवन बनना है! यदि हम मसीह में आने, जीवित पत्थरों के रूप में परमेश्वर के भवन का भाग बनने में असफल होते हैं, तो हम मनुष्य को दिए गए परमेश्वर के सबसे बड़े विशेषाधिकार से अपने आपको धोखा देते हैं। यदि हम परमेश्वर के भवन में प्रवेश पा लेते हैं, परन्तु परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए मसीही जीवन के लिए निकम्मे, अपर्याप्त जीवन को बदलकर परमेश्वर के भवन के रूप में जीवन बिताने में रहते हैं, तो एक बार फिर हम परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में जीवन न बिताकर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के अवसर को गंवाकर अपने आपको धोखा देते हैं।

हम परमेश्वर के लिए सुलैमान जैसा भवन नहीं बना सकते, क्योंकि कलीसिया को परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर के आत्मा से बनाया गया है। परन्तु हम सुसमाचार के आगे समर्पण करके और अपने ''जीवित पत्थरों'' अर्थात अपने जीवनों को हर रोज नियमित करके परमेश्वर का भवन *बन* सकते हैं, जिसके कोने के सिरे का पत्थर मसीह है!

क्या आप परमेश्वर के भवन में पत्थर की तरह लगे हैं?

पाद टिप्पणियां

[1]काम के लिए तीस हज़ार लोगों को नियुक्त किया जाता था, परन्तु प्रत्येक माह केवल दस हज़ार से ही काम कराया जाता था। इस प्रकार, बेगार पर लगाए उन लोगों में से हर एक तीन माह में केवल एक माह ही काम करता था (1 राजा 5:13)। [2]दूसरा इतिहास 2:18 में कनानी अधिकारियों की गिनती 3,600 है। दूसरा इतिहास 8:12 में इस्राएली अधिकारियों की गिनती 250 बताई गई है। इस प्रकार काम कराने वालों की कुल

संख्या 3,850 हो जाती है। पहला राजा 5:16 में अधीन अधिकारियों की गिनती 3300 और पहला राजा 9:23 प्रमुख अधिकारियों की गिनती 550 देता है। इस प्रकार काम कराने वाले अधिकारियों की कुल गिनती 3,850 होगी। इस तरह 2 इतिहास और 1 राजा काम कराने वाले अधिकारियों की गिनती एक समान बताते हैं, परन्तु काम कराने वालों को अलग दृष्टिकोणों से देखा गया है। [3]एफ. एफ. ब्रूस, द एपिस्टल टू इफिसियंस (ओल्ड टैपन, न्यू ज.: फलेमिंग एच. रेवल कं. 1961), 58.

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. सुलैमान द्वारा बनाए गए मन्दिर का वर्णन करें।
2. इफिसियों 2 अध्याय का इस्तेमाल करते हुए, गैर मसीही तथा मसीही में अन्तर के भेदों की तुलना पर चर्चा करें।
3. पौलुस इफिसियों 2:20,21 में कलीसिया की एकता के किन तीन रूपकों को दर्शाता है?
4. चर्चा करें कि आज परमेश्वर का मन्दिर ''मनुष्यों से बनी'' इमारत कैसे है।
5. ''जीवित पत्थर'' किसे कहा गया है- कलीसियाओं को या निजी मसीहियों को?
6. ईंट-पत्थरों के बनाए भवन के बारे में नये नियम में कितनी जानकारी दी गई है?
7. परमेश्वर के लिए हमारी आराधना और हमारी सेवा में प्रार्थना भवन की भूमिका पर चर्चा करें?
8. कलीसिया अर्थात चर्च ''जीवित'' इमारत कैसे है?
9. विस्तार से बताएं कि कलीसिया की दीवारें और नींव तो है पर छत नहीं है।
10. उन ढंगों की सूची बनाएं जिनसे कलीसिया विकास कर सकती है।
11. ''आत्मा के निवास'' वाक्यांश का अर्थ बताएं।
12. परमेश्वर के आत्मा द्वारा किए गए अन्तर को दिखाते हुए कलीसिया की तुलना मूर्तियों से बने एक मन्दिर से करें।
13. मकान *बनाने* और घर *बनने* के आदेश के अन्तर पर चर्चा करें।